अनुसंधान – १९९८ – ११
संपादक - विजयशीलचन्द्रसूरि

मुख्य टाइटल
सम्पादकीय निवेदन
अनुक्रमणिका
श्री चारूपमण्डन पार्श्वनाथस्तुतिः – सं. स्व. आगमप्रभाकर मुनि पुण्यविजयजी ---------------------- १
ज्ञानभंडार प्रशस्ति – आ. विजयप्रद्युम्नसूरि -- ६
पंडित कवि तत्त्वविजयजी रचित चोवीस जिन-गीतो – सं. मुनि जिनसेनविजय --------------------- ११
श्री हरिभद्रसूरिविरचित समसंस्कृतप्राकृत जिनसाधारणस्तवननो आस्वाद – सं. पारुल मांकड ------- २८
श्री जिनपतिसूरि पंचाशिका – सं. श्री भंवरलाल नाहटा --- ३२
अज्ञात-जैन मुनि कर्तृकं हाल्लार-देश चरित्रम् – सं. मुनि धर्मकीर्तिविजय ------------------------ ३७
अज्ञात-कर्तृक गणधर-होरा – सं. विजयशीलचन्द्रसूरि -- ४३
तपगच्छपति-श्रीमुनिसुन्दरसूरिकृता पञ्चसूत्रावचूरिः – सं. विजयशीलचन्द्रसूरि --------------------- ४७
त्रण जिनस्तोत्र – सं. विजयशीलचन्द्रसूरि -- ६३
श्रीहीरविजयसूरिकृत चतुरर्थी वीरस्तुतिः अज्ञातकर्तृकावचूरियुता – सं. मुनि धुरन्धरविजय ---------- ६७
पञ्चसूत्रना कर्ता कोम, चिरन्तनाचार्य के आ. हरिभद्र – विजयशीलचन्द्रसूरि ----------------------- ७१
शब्द प्रयोगोनी पगदंडी पर... – हरिवल्लभ भायाणी --- ९४
तीर्थंकर महावीरनुं देहवर्णन – हरिवल्लभ भायाणी -- ९९
आजना विज्ञानयुगमां जैन जीवविचारणानी आहारक्षेत्रे प्रस्तुतता – डॉ. नारायण म. कंसारा -------- १०२
मध्यकालीन धर्म विषय पद्यपरंपरा संगोष्ठी अहेला – प्रा. रमणीकलाल के. शाह तथा प्रा.
विनोद गांधी --- ११०
संशोधन माहिती – आ. विजयप्रद्युम्नसूरि --- ११५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org